इस्लाम धर्म शास्त्र-इमामत का वर्णन

लेखक : जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
अनुवादक : जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 2

इमामत (ईश्वरीय नेत्रत्व) का वर्णन

इमाम वह व्यक्ति है जो पैग़म्बर के पश्चात उसका उत्तराधिकारी होता है, जो अपने अनुयायियों का लोक तथा प्रलोक में नेता हो और समस्त आवश्यक कार्यों में सफ़लता पूर्वक ठीक–ठीक नेत्रत्व कर सके। वह पैग़म्बर अथवा नबी (सन्देश धारी) तो न हो परन्तु उसमें एक नबी अथवा पैग़म्बर के गुण अवश्य विद्यमान हों। वह मनुष्यों के गुणों से अधिक तथा उत्तम योग्यता रखता हो:

इमाम की आवश्यकता का कारण

(1) जिस प्रकार संसार को शिक्षा, कल्याण तथा उपदेश के हेतु नबी अथवा पैग़म्बर का होना आवश्यक है उसी प्रकार पैग़म्बर के पश्चात ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जिस के द्वारा संसार की शिक्षा दीक्षा तथा कल्याण के कार्य भली भांति होते रहें।

(2) चूंकि अब ईश्वर की ओर से कोई अन्य नबी अथवा पैग़म्बर नहीं आएगा और यही इस्लाम धर्म शास्त्र प्रलय तक शेष रहेगा अतः उसके भली भांति प्रसार के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो नबी अथवा पैग़म्बर की भांति कार्य करता रहे जिससे अनुयायियों का कल्याण होता रहे।

इमाम के गुण तथा चिन्ह (लक्षण और पहचान)

(1) इमाम का लघु तथा दीर्घ पापों से पवित्र होना। (2) उन समस्त बातों का ज्ञान होना जिसको आवश्यकता उनको होती है अर्थात् लोक एवम् परलोक की विद्याओं में दक्षिता रखता हो। धर्म के सिद्धान्तों से शिष्टाचारी तथा सदाचारी हो। (3) वीर तथा बलवान हो। (4) कुल सदगुणों अर्थात् वीरता, दया, धर्म, दान, कृपा, विद्वान तथा गम्भीर इत्यादि विशेषताओं का वाहक हो। (5) उन दुर्गुणों से वंचित हो जिससे लोगों को घृणा है। जैसे अन्धा, कोढ़ी, लंगड़ा, लूला, लोभी कंजूस न हो तथा घृणित रोगों से पवित्र हो, कुल का दीन तथा सन्देहमय न हो अपने तथा पूर्वजों के कुल में कोई कलंक न हो और लघु उद्यमी हो इत्यादि। (6) उनसे ऐसे चमत्कारों का प्रकटन हो जिसके प्रकट करने में अन्य लोग असमर्थ हों। (7) पशु तथा पक्षियों की बात को समझता हो। (8) समस्त नबियों पर उतारे गए धर्म ग्रन्थ उसके पास हों। (9) नाड़ कटा हुआ और मुसलमानी किया हुआ जन्म ले। (10) उसको स्वप्न दोष न होता हो। (11) उसके नेत्र सोते हैं परन्तु उसका हृदय नहीं सोता। (12) अंगड़ाई एंव जमाई नहीं लेता। (13) पीठ पीछे भी सामने की भांति देखता है। (14) हज़रत मुहम्मद स. साहब की ज़िरह (कवच) जब पहनता है तो उसके शरीर पर ठीक आती है। (15) मुहम्मद साहब स. के अस्त्र शस्त्र उसके उसके पास होते हैं विशेष कर 'ज़ुल्फ़िक़ार' (तलवार) जो आकाश से उतरी थी। (16) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल की समस्त विद्याएं उसके पास होती हैं। (17) समस्त पैग़म्बरों की विद्याओं का उत्तराधिकारी होता है। (18) समस्त भाषाओं का पूरा पूरा ज्ञानी होता है। (19) जिस बात को पूछा जाए उसका सन्तोषजनक उत्तर दे सकता हो। फ़रिश्ते (आकाश दूत) शबे क़द्र (यह रात्रि रमज़ान के महीने में पड़ती है) में उसके पास आकाश से उतरते हैं।

इमामों के नाम

(1) हज़रत इमाम अली अलैहिस्सलाम (2) हज़रत इमाम हसन अ0 (3) हज़रत इमाम हुसैन अ0 (4) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ0 (5) हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 (6) हज़रत इमाम जाफर ए सादिक अ0 (7) हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ0 (8) हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0 (9) हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी अ0 (10) हज़रत इमाम अली नक़ी अ0 (11) हज़रत इमाम हसन असकरी अ0 (12) हज़रत इमाम महदी

साहब उल–अस्र वज्ज़मान अ0। आप वर्तमान काल के इमाम है। आपका जन्म 15 शाबान 256 हि0 में हुआ था। आपकी इमामत आपके पिता के शहीद होने के पश्चात सन् 260 हि0 तद्नुसार 874 ई0 से आरम्भ हुई और अब तक है और भविष्य में भी रहेगी। वर्तमान समय में आप अदृश्य हैं। जब ईश्वर का आदेश होगा और आप प्रकट होंगे तो आकाश से हज़रत ईसा (येशू) उतरेंगे और आपके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। आप प्रकट होकर समस्त संसार को न्याय से परिपूर्ण कर देंगे। सब लोग सुख चैन से रहेंगे किसी प्रकार का दुःख एंव क्लेश नहीं होगा। उस समय समस्त विश्व इस्लाम धर्म का अनुयायी होगा।

इमामों की संक्षिप्त जीवनियां

(1) हज़रत इमाम अली अ0:— आपका जन्म 13 रजब सन् 599 में पवित्र काबा गृह के भीतर हुआ था। आप के पिता का नाम हज़रत अबूतालिब था। आप पैग़म्बर मुहम्मद साहब के चाचा के सुपुत्र थे और मुहम्मद साहब के दामाद भी थे। आप ने 10 वर्ष की आयु में ही सर्व प्रथम इस्लाम धर्म स्वीकार किया। आपने कभी मूर्ति पूजा नहीं की। आप सदैव मुहम्मद साहब के साथ रहे। मुहम्मद साहब की ओर से आपने शत्रुओं से सुरक्षा हेतु अनेकों युद्ध (जिहाद) किए और अनेकों प्रसिद्ध तथा वैभवशाली योद्धाओं को नर्क के घाट उतार दिया। आप को अब्दुल रहमान बिन (आत्मज) मुलजिम ने 21 रमज़ान सन् 40 हि0 तदानुसार 660 ई0 में कूफे की मस्जिद में प्रातः कालीन नमाज़ के समय आपको उस समय विषमय तलवार से शहीद किया जब आप ईश्वर को सजदा किए हुए थे। आप विश्व व्याख्यात वीरता के वाहक थे इसी कारण आप पर ईश्वर की ओर से 'जुलफिक़ार' नामक तलवार उतरी थी।

इमामत की घोषणा:— मुहम्मद साहब जब अन्तिम हज के पश्चात सन् 10 हि0 को मक्का से लौटे तो 'ग़दीर–ए–खुम' के स्थान पर समस्त हाजियों को रोक कर एकत्र किया और भाषण दिया और ईश्वर के आदेशानुसार हज़रत अली को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सभी लोगों ने स्वीकार किया और हज़रत अली अ0 को बधाई दी।

मोजिज़ा (चमत्कार):— आपके मोजिज़े अत्याधिक हैं। यहां पर केवल एक मोजिज़े का वर्णन किया जा रहा है। एक बार कुछ मुनाफिकों (कपटियों) ने आपको कष्ट देने तथा उपहांस की इच्छा से परस्पर यह निर्णय किया कि एक जीवित व्यक्ति को ताबूत (अर्थी) में रखकर ले चलें और उनसे कहें कि आप इस पर नमाज़–ए–जनाज़ा पढ़ा दें और जब आप नमाज़ पढ़ा चुकें तो हम सब व्यंगात्मक स्वर में उनसे कहें कि आप तो सभी गुप्त बातों को जानते हैं फिर जीवित व्यक्ति की नमाज़–ए–जनाज़ा कैसे पढ़ायी? जब ताबूत रखकर आपसे नमाज़ पढ़ाने को अनुरोध किया गया तो आपने उस व्यक्ति के संरक्षक से आज्ञा लेकर नमाज़ पढ़ा दी। नमाज़ के पश्चात सब कपटी कहने लगे कि आपने जीवित व्यक्ति की नमाज़–ए–जनाज़ा कैसे पढ़ा दी? आपने कहा खोल कर देखो। जब खोल कर देखा गया तो वास्तव में वह जीवित व्यक्ति मर चुका था। अतः इस पर सभी कपटी लज्जित हुए।

हज़रत अली अ0 के विचार और जीवन

(1) ईश राज्य नेता:— ईश्वर ने इमामों पर यह अनिवार्य किया है कि वे अपना जीवन स्तर दीन, हीनों की दशा के अनुकूल रखें ताकि दोनों को उनकी दीनता नष्ट न कर दे।

(2) भूखों के होते हुए पेट भर भोजन उचित नहीं:— यदि मैं चाहूं तो मैं भी निर्मल और स्वच्छ मधु और गेहूं की रोटी तथा रेशमी वस्त्र पहन सकता हूं परन्तु शोक का स्थान होगा कि मैं इच्छाओं का वशीभूत हो जाऊं, लोग मुझे स्वादिष्ट भेजन की ओर आकर्षित करें ऐसी दशा में जब कि हिजाज़ एंव यमामा देशों में ऐसे व्यक्ति हों जिनको एक रोटी का भी सहारा न हो वे जानते ही नहीं कि पेट भरना किसे कहते हैं। क्या मैं अपना पेट भर कर चैन से सोऊं जब कि भूखे मेरे पास उपस्थिति हों।

(3) न घर बनवाया न किसी को जायदाद दी:— हज़रत अली अ0 (35 हि0 से 40 हि0) अनुमानतः (लगभग) 5 वर्ष तक रही परन्तु उस समय आपने ईट पर ईट नहीं रखी अर्थात् घर का निर्माण नहीं किया और न किसी व्यक्ति को कोई जागीर दी।

(4) सरल जीवन:— आप दर्ज़ी से अपने जुब्बे (वस्त्र) में पेवन्द लगवाते थे और 70 पेवन्द उसमें हो चुके थे तब स्वयं कहा कि मुझे दर्ज़ी से कहते हुए लज्जा आती है कि वह अभी और पेवन्द लगाए (1) आप मज़दूरों की भांति भूमि पर बैठते थे। वहीं भोजन करते

थे और भूमि पर सो रहते थे। स्वयं अपने हाथ से लकड़ियां लाते, पानी भरते, घर में झाड़ू देते और बाग़ों में जाकर मज़दूरी करते थे।

(5) धन के बटवारे में समानता :– जिनपर शासक बनाया गया हूं उनका अधिकार छीन कर तुमको अधिक दूं और फिर देकर तुम्हें अपना सहयोगी बनाऊं। ईश्वर की सौगन्ध मैं इस नियम के निकट नहीं जाऊंग यदि यह धन मेरा अपना होता तो भी लोगों में बराबर विभाजित (वितरित) करता। फिर जब कि यह धन ईश्वर का है तो फिर कैसे समानता का व्यवहार न करूं। बिना अधिकार किसी को धन देना लोक में उच्चता सही परन्तु परलोक में नीचता ही घोषित होगी। आपने अपने भाई अक़ील का हाथ इस कारण गर्म लोहे से दाग़ दिया था कि उन्होंने अधिकार से अधिक लेने की चेष्टा की थी। अपनी पुत्री को जिन्होंने बैत–उल–माल (कोष) से गर्दन बन्द मगनी लेकर पहिन लिया था डराया धमकाया कि ऐसा करना उचित नहीं है।

(2) हज़रत इमाम हसन अ0:– आपका जन्म 15 रमज़ान सन् 3 हिजरी तदानुसार सन् 624 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत अली अ0 तथा माता का नाम हज़रत फ़ातिमा अ0 (स्वर्ग बाला) था। आप मुहम्मद साहब के बड़े नाती थे। अपने पिता के शहीद हो जाने के पश्चात् आप सन् 40 हिजरी में इमाम हुए। आपको जादा आत्मजा अशअस ने माविया की इच्छानुसार तथा उसके संकेत पर विष देकर सन् 49 हिजरी में शहीद कर दिया। आप बड़े गम्भीर तथा सहनशील थे।

मोजिज़ा (चमत्कार):– आपने किसी प्रश्न के उत्तर में किसी व्यक्ति से कहा कि यदि मैं ईश्वर से प्रार्थना करूं तो ईरान देश को सीरिया कर दे, स्त्री को पुरूष को स्त्री कर दे। वहां एक सीरिया का निवासी बैठा था उसने यह सुनकर व्यंग किया कि कौन ऐसा है कि सम्भव को असम्भव बना दे। यह सुनकर हज़रत ने उस से कहा कि उठ खड़ी हो ऐ नारी। तुझे लज्जा नहीं आती कि तू पुरूषों के बीच में बैठी हुई है। अब उसने आश्चर्य से अपने शरीर पर दृष्टिपात की तो वस्तुतः वह स्त्री हो चुका था। वह अत्यन्त व्यकुल हुआ। आप ने उससे कहा कि घबरा मत तेरी स्त्री भी पुरूष हो गया है और तुझे उस से गर्भ भी रहेगा और तू एक नपुंसक बच्चे को भी जन्म देगा। अन्त में ऐसा ही हुआ। तदोपरान्त उन दोनों ने आप से क्षमा मांगी। हज़रत ने प्रार्थना की और वे दोनों पुनः अपनी पूर्व दशा में परिवर्तित हो गए। आपके और भी अनेकों मोजिज़े हैं।

(4) हज़रत इमाम हुसैन अ0:– आपका जन्म 3 शाबान सन् 4 हिजरी तदानुसार 625 ई0 में मदीना में हुआ था। आप हज़रत अली अ0 के छोटे पुत्र तथा मुहम्मद साहब के छोटे नाती थे। आप तथा आपके बड़े भाई हज़रत इमाम हसन अ0 के सम्बन्ध में मुहम्मद साहब ने यह बारम्बार कहा था कि ये दोनों स्वर्ग के नेता हैं। दोनों भाइयों तथा इन के माता पिता ने तीन दिन तक निरन्तर व्रत पर व्रत रखा और अपने सामने का भोजन दीन दुखियों तथा बन्दी को दे दिया जिसके उपलक्ष में कुरान में सूरा 'हल अता' आया है, जिसमें ईश्वर ने आप लोगों की कार्यवाहियों की प्रशंसा की है। आप को दस मुहर्रम सन् 61 हिजरी में कर्बला के मैदान में बाल–बच्चों तथा सहयोगियों सहित तीन दिन की क्षुदा एंव त्रिष्णा में बरर्बता से शहीद कर डाला गया। (सन् 680 ई0)

मोजिज़ा (चमत्कार):– 'फितरूस' नामक फरिश्ता जिसके पंख किसी कारण से झड़ गए थे आप के जन्म के समय अन्य फरिश्तों के साथ आया और अपने शरीर को आप के पवित्र शरीर से स्पर्श किया जिससे उसके पंख जम गए और वह भी उड़कर अपने स्थान पर चला गया।

इमामत:– आपकी इमामत सन् 49 हिजरी अर्थात् अपने बड़े भाई हज़रत इमाम हसन अ0 की शहादत के पश्चात से आरम्भ होती है और सन् 61 हिजरी में समाप्त होती है। भाइयों में केवल आप ही को इमामत मिली वरन् पिता के पश्चात केवल (एक) पुत्र उसका उत्तराधिकारी होता रहा।

विशेषता:– कर्बला के रणक्षेत्र में भूखे, प्यासे शहीद होने के कारण आप को तीन विशेषताएं (वरदान) प्राप्त हुईः–

(1) आपकी कब्र की मिट्टी में यह प्रभाव है कि वह रोगियों तथा दुखियों के लिए कल्याण तथा लाभदायक है इस मिट्टी को ख़ाके शिफा कहते हैं।

(2) यदि आपकी क़ब्र के पास प्रार्थना की जाए तो ईश्वर अवश्य स्वीकार करता है।

(3) आगामी इमामत की कड़ी आप ही के वंश में रही।

(4) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ0:– आप का जन्म 15 जमादी–उल–अव्वल सन् 36 हिजरी तदानुसार सन् 658 ई0 में मदीने में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम हुसैन अ0 था। आप कर्बला के महान बलिदान स्थान में उपस्थित थे परन्तु रोग ग्रस्त होने के कारण जीवित बच गए। कर्बला कांड के पश्चात आप माता एंव बहिनों के साथ बन्दी बना कर कुफ़ा, सीरिया तथा दमिश्क़ लाए गए थे। अनुमानतः एक वर्ष तक कारावास में रहे फिर वहां से मुक्ति मिलने पर कर्बला होते हुए मदीने लौटे। वहां 34 वर्ष तक पिता के शोक में आतुर रहे। अन्त में सन् 94 हिजरी तदानुसार सन् 712 ई0 में अब्दुल मलिक नामक शासक द्वारा विष दिये जाने पर आप का अमरत्व (शहादत) हुआ। अत्यधिक ईश्वरोपासना करने के कारण आपकी पदवी, ज़ैनुल–आब्दीन (भक्तों/उपासकों की शोभा) हो गई थी आप सदैव ईश्वरोपासना तथा प्रार्थना में लीन रहते थे।

मोजिज़ा (चमत्कार):– एक बार आप हज करने मक्का जा रहे थे। मार्ग मे डाकू मिले और उन्होंने कहा कि हम आपका वध कर डालेंगे और समस्त सामग्री भी छीन लेंगे। आपने स्वयम् उनको आधी सामग्री देने को कहा जिसे अस्वीकार कर दिया गया फिर आपने कहा कि अच्छा मक्का पंहुचने तक सामग्री रहने दो। डाकू जब इस पर भी सन्तुष्ट न हुए तो आपने एक से पूछा तुम्हारा ईश्वर इस समय कहां है। उसने उत्तर दिया कि वह इस समय निद्रा में सो रहा है। यह सुन कर सामने से दो सिंह प्रकट हुए एक ने उसका सिर लिया दूसरे ने उसके पैर। आपने कहा ईश्वर सोया नहीं करता।

(5) हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0:– आपका जन्म 1 रजब सन् 57 हिजरी तदानुसार सन् 676 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत ज़ैनुल–आबिदीन अ0 था। आप कर्बला के बलिदान स्थान में अपनी माता की गोद में थे। काण्ड के पश्चात आप भी बन्दी बन कर माता के साथ सीरिया गए थे। बनी उमय्या जो उस समय का शासक था उसकी निर्बलता के कारण आपने धर्म सिद्धान्त, शिक्षा एंव विद्या के विकास में कार्य किया। आपकी इमामत सन् 94 हिजरी से आरम्भ होती है। आपको हश्शाम आत्मज मलिक नामक शासक ने सन् 114 हिजरी तदानुसार 731 ई0 में विष देकर शहीद किया।

मोजिज़ा (चमत्कार):– आपके पिता के समय में जब बनी उमय्या हज़रत के शियों (अनुयायियों) को अधिक कष्ट देने लगे तो उन लोगों ने आपके पिता से दुहाई दी। आपने अपने पुत्र इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 से कहा कि हे पुत्र जो डोरा जिबराईल (ईश्वर दूत) लाए थे उसको हिलाओ। आप वह डोरा लेकर मस्जिद–ए–रसूल में आए। दो रकत नमाज़ पढ़ कर मस्तक पृथ्वी पर रख कर प्रार्थना की। फिर सिर उठाकर कुर्ते की आस्तीन से वह डोरा निकाला फिर 'जाबिर' अ0 को देकर कहा फैल जाओ। फिर आपने उस डोरे को हिलाया जिसके कारण मदीने में एक भीषण भूकम्प आया और बहुत से घर ध्वस्त हो गये। फिर डोरे को लपेट कर जब ईश्वर से प्रार्थना की तब वह भूकम्प समाप्त हुआ।

(6) हज़रत इमाम जाफ़र–ए–सादिक़ अ0:– आपका जन्म 17 रबी–उल–अव्वल सन् 83 हिजरी तदानुसार 602 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 था। आपकी इमामत अपने पिता की मृत्यु के पश्चात 114 हिजरी से आरम्भ हुई थी आपके समय में विभिन्न प्रकार की विद्याओं, धर्म शास्त्रीय सिद्धान्तों एंव उपदेशों का प्रचार हुआ। आपको 'मंसूर दवानीक़ी अब्बासी' नामक शासक ने विष देकर 148 हिजरी तदानुसार 765 ई0 में शहीद किया।

मोजिज़ा (चमत्कार):– एक बार आप अपने किसी बनावटी मित्र से वार्तालाप कर रहे थे कि उसी समय आपके एक माननीय मित्र वहां पधारे आपने उनसे कहा कि आप इस तनूर (अग्नि कुण्ड) में चले जाइए। उस पर वे सज्जन तुरन्त अग्नि में कूद पड़े और वहां जाकर बैठे रहे। थोड़े समय के पश्चात जब आप ने कपटी मित्र के साथ उस अग्नि कुण्ड के समीप आकर देखा तो चुप चाप बैठे हुए थे। आपने उनको फिर बाहर निकाल लिया।

(7) हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ0:– आपका जन्म 7 सफ़र सन् 128 हिजरी तदानुसार 746 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत जाफ़र–ए–सादिक़ अ0 था। आपकी इमामत आपके पिता के पश्चात 148 हिजरी से आरम्भ हुई थी आप

के जीवन के अन्तिम 15 वर्ष हारून रशीद अब्बासी नामक शासक के कारागार में व्यतीत हुए यहां तक कि मृत्यु के पश्चात लोहे की बेड़ियों तथा कारागार से मुक्ति मिली। आप प्रत्येक समय ईश्वरोपासना किया करते थे। आप अपने समय के महान विद्वान थे। आपको हारून रशीद अब्बासी शासक ने 25 रजब सन् 183 हिजरी तदानुसार 799 ई0 में विष देकर शहीद किया।

मोजिज़ा (चमत्कार):— एक बार हम्माद आत्मज ईसा ने आपकी सेवा में उपस्थित होकर कहा कि आप मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह मुझे एक घर, एक स्त्री, एक पुत्र तथा एक नौकर प्रदान करें और मुझे प्रत्येक वर्ष हज करने का अवसर भी प्राप्त हो। आपने प्रार्थना की कि हे परमात्मा इस व्यक्ति को एक घर, एक स्त्री, एक पुत्र तथा 50 वर्ष तक हज करने का अवसर प्रदान किया जाए। हम्माद का कथन है कि हज़रत की प्रार्थना से मुझे ये समस्त वस्तुएं प्राप्त हुईं और 50 वर्ष तक मैंने हज भी किया उसके पश्चात जब दूसरे वर्ष हज के लिए चले तो हज के पूर्व ही 'जुहफा' नामक स्थान पर पानी में डूब कर मर गए।

(8) हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0:— आपका जन्म दिनांक 11 ज़ीकायदा सन् 153 हिजरी तदानुसार 770 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम मूसा0 काज़िम अ0 था। आप की इमामत 183 हिजरी से आरम्भ होती है मामून रशीद अब्बासी शासक ने राजनैतिक समस्याओं से विवश होकर आप को अपना युवराज बनाया था परन्तु समस्याओं के समाधान के पश्चात उसी शासक ने आपको 203 हिजरी तदानुसार 818 ई0 में विष देकर शहीद कर दिया। मामून कुल विद्वानों को एकत्र करके आपसे वाद विवाद करता था। आप प्रत्येक विद्वानों को ऐसा उत्तर देते थे कि सब चुप हो जाते थे।

मोजिज़ा (चमत्कार):— मुहम्मद आत्मज काब जुहफा नामक स्थान पर जो सीरिया वालों का मीक़ात है सो रहा था कि रात्रि के समय स्वप्न में उसने मुहम्मद साहब को देखा। कुछ समय की वार्तालाप के पश्चात मुहम्मद साहब स. ने अपने सामने की परात में से जिसमें खजूर रखी थी एक मुट्ठी खजूर उसे दी। उसका कथन है कि जब मैंने उन खजूरों को गिना तो वे 18 थीं। जाग्रित होने पर उसने विचार किया कि मैं 18 वर्ष तक और जीवित रहूंगा। कुछ दिनों के पश्चात मदीनें में इमाम अली रिज़ा अ0 आए मैं उनके पास गया। वे भी उसी स्थान पर बैठे थे जहां मुहम्मद साहब बैठे थे। उनके सम्मुख एक परात में सीहानी खजूरें रखी थीं। उन्होंने एक मुट्ठी खजूर मुझे दी। जब मैंने गणना की तो 18 खजूरें थीं। मैंने और मांगा इस पर आपने उत्तर दिया कि यदि मेरे पूर्वज मुहम्मद साहब ने इस से अधिक दिया होता तो मैं भी और देता।

(9) हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी अ0:— आपका जन्म दिनांक 10 रजब सन् 195 हिजरी तदानुसार सन् 811 ई0 को मदीने में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0 था। आप की इमामत आपके पिता के शहीद होने पर 203 हिजरी से अनुमानतः (लगभग) 8 वर्ष की आयु में आरम्भ होती है। आपने अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान यहिया आत्मज अक़सम को वाद विवाद में परास्त किया था। आपको 25 वर्ष ही की आयु में मोतसिम अब्बासी शासक ने सन् 220 हिजरी तदानुसार 835 ई0 में विष देकर शहीद कर दिया।

मोजिज़ा (चमत्कार):— सीरिया का एक व्यक्ति उस स्थान पर ईश्वरोपासना किया करता था जहां पर हज़रत इमाम हुसैन अ0 का पवित्र सिर (कटा हुआ) रखा गया था। वह एक रात्रि उपासना में लीन था कि उसने देखा कि सामने एक पुरूष खड़ा है। उसने कहा कि उठ खड़ा हो और मेरे साथ चल। वह अभी थोड़ी ही दूर गया था कि स्वयम् को कूफ़ा की मस्जिद में पाया फिर वहीं दोनों व्यक्तियों ने नमाज़ पढ़ी। उसके पश्चात थोड़ी दूर चल कर मदीना में मस्जिद—ए—रसूल में पंहुच गया। वहां उन दोनों ने काबे का तवाफ़ (चहु ओर घूमना परिक्रमा) किया। फिर थोड़ा दूर चलने पर सीरिया पंहुच गया। फिर वह व्यक्ति अदृश्य हो गया। अगामी वर्ष फिर वही पुरूष आया और फिर समस्त उक्त स्थानों को गया। अन्त में जब उसने आप का शुभ नाम पूछा तो आपने कहा कि मेरा नाम मुहम्मद तक़ी है।

(10) हज़रत इमाम अली नक़ी अ0:— आप का जन्म 2 रजब सन् 212 हिजरी तदानुसार 829 ई0 को हवाली मदीना में हुआ था आपके पिता का नाम हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी अ0 था। आपकी इमामत

भी अनुमानतः (लगभग) 8 वर्ष की आयु से आरम्भ होती है। आपको मुतवक्कल अब्बासी शासक ने कारागार में बन्द कर दिया था। आपको सन् 254 हिजरी तदानुसार 868 ई0 में मोतमद अब्बासी शासक ने विष देकर 41 वर्ष की आयु में शहीद कर दिया।

मोजिज़ा (चमत्कार):— एक बार मुतवक्कल अब्बासी शासक ने आप को दरिन्दों (फाड़ खाने वाले पशु) के सामने भेज दिया और स्वयं कोठे पर चढ़ कर देखने लगा। सभी पशु आप के चरणों का चुम्बन लेने लगे और दुम हिलाकर चारों ओर घूमने लगे।

(11) हज़रत इमाम हसन असकरी अ0:— आप का जन्म सन् 232 हिजरी तदानुसार 846 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम अली नक़ी अ0 था। आप की इमामत सन् 254 हिजरी से आरम्भ होती है आप को मोतमद अब्बासी शासक ने बन्दी बना लिया था आपने अपने समय के नसरानी (ईसाई) विद्वान को पराजित किया था। आप के केवल एक ही पुत्र "इमामे ज़माना" हैं आपको मोतमद अब्बासी शासक ने सन् 260 हिजरी तदानुसार 874 ई0 में विष देकर शहीद किया।

मोजिज़ा (चमत्कार):— एक बार मुहम्मद आत्मज अयाशक इत्यादि परस्पर आप के मोजिज़े का वर्णन कर रहे थे। वहीं एक नासिबी (बैरी) भी था उसने कहा मैं कुछ प्रश्न बिना कलम तथा सियाही के कागज़ पर लिखता हूं। उन्होंने मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दिया तो मैं समझूंगा कि वे सच्चे इमाम हैं। अयाशक कहते हैं कि हमने कुछ प्रश्न लिखे उस नासेबी ने भी बिना सियाही के एक काग़ज़ पर कुछ प्रश्न लिखे फिर सभी प्रश्न हज़रत की सेवा में भेज दिये गये। वहां से हमारे प्रश्नों के उत्तर आये और उसके काग़ज़ पर भी उत्तर लिखे हुए थे। पते के लिए उसका तथा उसके माता पिता का नाम भी आपने लिख दिया था। देखते ही वह चकित होकर मूर्छित हो गया। जब ठीक हुआ तो आप को सच्चा इमाम स्वीकार करके शिया हो गया।

(12) हज़रत इमाम महदी आखिरूज़्ज़माँ अ0:— आपका जन्म 255 अथवा 256 हिजरी तदानुसार 869 ई0 सामिरा में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम हसन असकरी अ0 था। आप अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। आपकी इमामत आपके पिता के शहीद होने के पश्चात 260 हिजरी तदानुसार 874 ई0 से आरम्भ होकर अब तक शेष है। आप वर्तमान काल के इमाम हैं। आप शत्रुओं के भय से ईश्वर की इच्छानुसार जन्म से ही लोगों की दृष्टि में नहीं हैं। आप का दर्शन केवल आप के विशेष मित्रों तथा अनुयायियों ने किया है।

संदेह का उत्तर:— साधारण जनता आपके अदृष्य होने तथा आप की दीर्घायु होने पर आश्चर्य चकित है, इस भ्रम का उत्तर यह है:—(1) जिस प्रकार हज़रत इब्राहीम अ0 तथा हज़रत मूसा अ0 नमरूद तथा फ़िरऔन के भय से अधिक समय तक अदृश्य रहे उसी प्रकार आप भी शत्रुओं के भय से अदृश्य हैं (2) आपके दीर्घायु होने पर भी अचरज नही करना चाहिए जब नबियों में आकाश पर हज़रत ईसा अ0 तथा हज़रत इद्रीस अ0 और पृथ्वी पर हज़रत खिज्र व इल्यास अ0 जीवित हैं। और पापियों तथा दुष्टों में, दज्जाल एंव इबलीस (शैतान) अब तक उपस्थित हैं और हज़रत नूह अ0 की आयु 2500 वर्ष मानते हैं तो पैग़म्बर अ0 के गौत्र के एक बालक के दीर्घायु पर आश्चर्य करना व्यर्थ है। आपकी ओझलता 2 प्रकार की है (1) लघु ओझलता (2) दीर्घ ओझलता।

(1) लघु ओझलता:— सन् 255 हिजरी से लेकर सन् 329 हिजरी तक रही। इस समय में आप के अनेकों सहयोगी और नायब कार्य करते थे जिनको लोग पत्र देते थे उसका उत्तर हज़रत के कर कमलों से लिख कर आता था। इन सहायकों से मोजिज़े (चमत्कार) प्रकट होते थे जिस के कारण लोगों को यह विश्वास था कि ये लोग हज़रत की ओर से ही नियुक्त किए गए हैं। इस लघु ओझलता के समय आपके सहयोगियों के अतिरिक्त और भी अन्य व्यक्ति हज़रत की सेवा में उपस्थित होते थे। आपके चार प्रसिद्ध सहयोगी थे जिनका विवरण इस प्रकार है।

चार सहयोगी (नायब):— (1) उस्मान आत्मज सईद असदी (2) अबू जाफ़र मोहम्मद आत्मज उस्मान। (3) अबुल क़ासिम हुसैन आत्मज रौह नौबख़्ती (4) शेख़ जलील अली आत्मज मुहम्मद समरी।

(2) दीर्घ ओझलता:— सन् 329 हिजरी से आरम्भ प्रकट होने तक अर्थात अनिश्चित काल तक रहेगी नियाबत व सिफ़ारत सब बन्द कर दी गई है अर्थात अब आप की ओर से सहयोगी तथा दूत के रूप में

कोई कार्य नहीं करता। इस समय में भी कुछ लोगों ने इमाम को देखा परन्तु उस समय न पहचान सके अथवा इस बात की घोषणा करने की आज्ञा न थी या वर्णन करने वालों ने केवल इष्ट मित्रों से ही वर्णन किया था।

आप के प्रकट होने के चिन्ह

(1) जब पुरूष स्त्रियों की भांति हो जाएंगे और स्त्रियां पुरूष बनने की चेष्टा करेंगी। (2) पुरूष पर पुरूष तथा स्त्रियों पर स्त्रियां संतोष करेंगी। (3) स्त्रियाँ घोड़े की सवारी करेंगी। (4) असत्य गवाही स्वीकार की जाएगी और सच्ची गवाही रद कर (ठुकरा) दी जाएगी। (5) लोग रक्तपात करना, बलात्कार करना तथा ब्याज खाने को हलका तथा उचित कार्य समझेंगे। (6) संसार अत्याचार से परिपूर्ण हो जाएगा। (7) दज्जाल प्रकट होगा। (8) पृथ्वी के कीट अर्थात् सर्प एंव बिच्छू इत्यादि का प्रकट होना। (9) रबी–उल–आखिर एंव रजब के मास में 10 दिन तक निरन्तर वर्षा का होना। (10) सुफ़ियानी का निकलना। (11) आकाश से एक विचित्र ध्वनि का होना। (12) हज़रत ईसा अ0 का आकाश से धरती पर उतरना। (13) देलम तथा क़ज़वैन की ओर से सय्यद हसनी का निकलना। (14) रमज़ान मास की 14–15 तिथि को सूर्य ग्रहण तथा अंतिम तिथि को चन्द्र ग्रहण लगेगा। (15) दुम दार सितारों (पुच्छलतारों) का निकलना। (16) आपके प्रकट के पूर्व अधिक सूखे का पड़ना, भूकम्प आना वृहद प्लग एंव क्षय रोगों का फैलना इत्यादि।

मोजिज़ा (चमत्कार):– आपके पिता के शहीद होने के पश्चात कुम (ईरान देश का एक नगर) के निवासी आए और हज़रत इमाम हसन असकरी अ0 को पूछा। लोगों ने कहा कि उनका देहान्त हो गया है। पूछा इमाम कौन हैं इस पर लोगों ने जाफ़र (आपके काका) की ओर संकेत किया। उन लोगों ने जाफ़र के समीप जाकर शोक प्रकट किया और कहा कि हमारे पास कुछ पत्र और धन हैं। बताओ पत्र किसके हैं और धन कितना है ताकि हम तुमको दे दें। यह सुनकर जाफ़र ने कहा कि लोग भविष्य की बात पूछते हैं। उसी समय 'अक़ीदा' नामक सेवक इमाम–ए–ज़माना की ओर से आया और कहा कि इनके इनके पत्र हैं और एक थैली में एक हज़ार अशरफियां हैं जिस में 10 अशरफ़ियां खोटी हैं। यह सुनकर वे पत्र और वह धन उस सेवक को दे दिया और कहा कि जिस श्रेष्ठ व्यक्ति ने आप को पत्र तथा धन लेने के लिए भेजा है वही इमाम–ए–ज़माना हैं।

रजअतः– अर्थात प्रलया के पूर्व इमाम–ए–ज़माना के समय में अधिक कुकर्मियों तथा सुकर्मियों का एक–एक झुण्ड संसार में आएगा। सुकर्मियों का झुण्ड संसार मे इस कारण आएगा की अपने इमामों का धन एंव राज देखकर ये लोग प्रफुल्लित हों और इनकी भलाइयों का कुछ बदला उनको इसी संसार में प्राप्त हो। और कुकर्मियों का पुनः आगमन सांसारिक कष्ट एंव दण्ड के हेतु है और इस कारण कि रसूल अ0 के परिवार वालों को धन की प्राप्ति न देख सकते थे उससे कई गुना देखेंगे और धर्मी शिया गण उनसे बदला लेंगे। शेष समस्त व्यक्ति अपनी क़ब्रों मे रहेंगे।

क़ायम अ0 के संघाती

नजफ़ अशरफ़ (इराक़) से 27 व्यक्ति बाहर आएंगे। 15 व्यक्ति हज़रत मूसा अ0 की जाति से होंगे। 7 व्यक्ति 'असहाब–ए–कहफ' से और यूशा आत्मज नून अ0, सलमान–ए–फारसी, अबूज़र, मेक़दाद, मालिक–ए–अश्तर और उनके मित्र। उनकी ओर से शासक नियुक्त किए जाएंगे और 313 मोमिनगण होंगे जो चमत्कार द्वारा क़ायम अ0 के समीप आयेंगे।

रजअत की मुख्य घटनाएं

(1) दज्जाल लईन (दृष्ट) का वध करेंगे (2) हज़रत ईसा अ0 भूमि पर पधारेंगे और हज़रत महदी अ0 के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे (3) समस्त संसार से अत्याचार को दूर करके न्याय से भर देंगे (4)संसार के कुल धर्मों का भेद भाव मिटा देंगे केवल लोग इस्लाम धर्म को स्वीकार करेंगे (5) असत्य का सर्वनाश होगा और सत्य का बोल बाला रहेगा (6) कूफ़ा नगर (इराक़) का विस्तार 8 फ़रसख़ अर्थात 86.3 (लगभग) किलोमीटर होगा। कूफ़ा के महल कर्बला (इराक़) से मिल जाएंगे (6) मस्जिद–ए–कूफ़ा से घी तथा दूध का स्रोत प्रवाहित होगा (8) उन पशुओं का वध कर डाला जाएगा जिनका मास मुसलमान नही खाते अर्थात जो हराम है। (9) 'जज़िया नामक कर (दण्ड रूपी कर) को हटा देंगे।' (10) ईश्वर अत्यधिक बर्कत (प्रत्येक वस्तु में वृद्धि) आकाश से उतारेगा कि मेवों के वृक्षों की

(पेज नं0 16 पर................)

लखनऊ में मौलाना कल्बे जवाद की क़यादत में दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ पुर अम्न ऐतेजाज

31 मार्च 2013 को आलमी पैमाने पर फैली दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ हिन्दू, मुस्लिम सिख और ईसाई मज़हब के रहनुमा एक साथ एहतेजाजी अम्न मार्च में शामिल हुए। इस तारीख़ी मौक़े पर सभी ने अमरीका, इस्राईल और सऊदी अरब के द्वारा फैलाई जा रही दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ अपनी हिमायत का ऐलान किया। इस अवसर पर सभी ने कहा कि दहशत गर्दी का कोई मज़हब नहीं है, उसको किसी भी मज़हब से जोड़ना ग़लत है।

मक़बरा सआदत अली ख़ां से मौलाना कल्बे जवाद, मौलाना अबुल इरफ़ान फिरिंगी महली, मुहम्मदी मिशन के सद्र मुहम्मद अय्यूब अशरफ़, अयोध्या के महन्त देवयागिरि, सरदार डा० गिरमीत सिंह, सरदार जगजीत सिंह और मसीही एसोसिएशन के राकेश चितरी की क़यादत में हज़ारों की तादाद में लोगों ने एक अम्न मार्च गांधी मुजस्समा जी पी ओ पार्क तक निकाला। इस मार्च में दहशत गर्दी के ख़िलाफ़ नारे लगाते हुए लोग चल रहे थे। उससे क़ब्ल एक एहतेजाजी जलसा मक़बरा नवाब सआदत अली खां में हुआ जिसमें मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के रहनुमाओं ने दहशतगर्दी की मज़म्मत करते हुए मुत्तहिद होने पर पूरा ज़ोर दिया। महन्त देवयागिरि ने कहा कि सभी मज़हब रहमत का दर्स देते हैं। और उसी से सबक़ हासिल करके आज हम दहशत गर्दी के ख़िलाफ़ मुत्तहिद रहना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अवाम वोटों की सियासत को समझे तभी वो दहशतगर्दी के ख़िलाफ कोई क़दम उठा सकती है। उन्होंने कहा कि आज नहीं तो कल दहशत गर्दी को ख़त्म होना होगा।

अपने इस्तेक़बालिया ख़िताब में मौलाना कल्बे जवाद ने रसूल स. की एक हदीस बयान की जिसमें उन्होंनें इर्शाद फ़रमाया है कि मज़लूम की बददुआ से डरो, मौलाना ने कहा कि मज़लूम सिर्फ मुसलमान ही नहीं बल्कि किसी भी क़ौम का हो सकता है। इस्लाम ही नहीं बल्कि किसी भी मज़हब में ज़ुल्म की इजाज़त नहीं है। उन्होंने कहा कि ये तारीख़ी मौक़ा है जब ज़ुल्म के ख़िलाफ सभी मज़हब के रहनुमा एक साथ खड़े हैं। मौलाना ने कहा कि आज का ये तारीख़ी मौक़ा ये भी साबित करता है कि दहशतगर्दी का तअल्लुक़ किसी मज़हब से नहीं, उन्होंने कहा हम हमेशा इस बात के ख़िलाफ़ नज़र अए हैं कि दहशतगर्दी को किसी मज़हब के नाम से जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि मज़हबी तालीमात पर चलकर मुल्क और इन्सानियत को बचाया जा सकता है। उन्होंने अमरीका को दहशतगर्दी का बाबा आदम बताया। और कहा कि अमरीका ने ही दहशतगर्दी को बढ़ावा दिया। उन्होने अपने बयान को जारी रखते हुए कहा कि दहशतगर्दी के लिए सऊदी अरब और क़तर से फण्डिंग की जा रही है। अरब देशों में अमरीका और इस्राईल के ख़िलाफ़ बोलने पर पाबन्दी है। अरब में 50,0000 अमरीकी फौजियों की मौजूदगी मक्का और मदीना के लिए ख़तरनाक है। क्योंकि ये फौजें 15 मिनट में सऊदी अरब पर क़ब्ज़ा कर सकती हैं। उन्होंने हिन्दुस्तानी हुकूमत से दहशतगर्दी से सख़्ती से निपटने की मांग की। और गुजरात फ़सादात के मुजरिम ख़ासकर नरेन्द्र मोदी को भी फ़ांसी दिये जाने की मांग की।

उन्होंने लखनऊ के वज़ीरगंज में दहशत गर्दाना कार्रवाई के मुजरिमों की रिहाई पर अफ़सोस का इज़हार करते हुए कहा कि इससे तो दहशतगर्दी और बढ़ेगी और रियासती हुकूमत को चाहिए कि वो वोटों की लालच में दहशतगर्दी को बढ़ावा न दे।

उन्होंने इराक़, म्यामांर, सऊदी अरब, पाकिस्तान आदि में जारी दहशतगर्दाना हमलों पर पाबन्दी लगाए जाने की मांग की।

(पेज नं० १४ का.........बक़िया) शाखाएं टूट जाएंगी। गर्मियों का मेवा जाड़े में तथा जाड़े का मेवा गर्मियों में उपलब्ध होगा। (11) ईश्वर शियों (अनुयायी) को ऐसी शक्ति प्रदान करेगा कि भूमि का कोई पदार्थ भी उनसे गुप्त न रह सकेगा। यदि कोई अपने घर का समाचार जानना चाहेगा तो उसे 'इलहाम' (ईश्वर की ओर से हृदय में एक पूर्ण विश्वास का बैठ जाना) होगा कि उसके घर वाले क्या करते हैं। (12) हज़रत महदी अ०, हज़रत आदम अ० व नूह अ० की छड़ी, हूद अ० व सालेह अ० की बपौती, इब्राहीम अ० व सालेह अ० व यूसुफ अ० का संग्रह, और पैमाना (तराज़ू) शुऐब अ० और मूसा अ० का ताबूत (बक्स) एंव डण्डा दाऊद अ० का कवच, सुलैमान अ० का मुकुट व अंगूठी और हज़रत ईसा अ० की सामग्री एवं समस्त वैभवशाली पैग़म्बरों की बपौती उपस्थिति करेंगे। (13) हज़रत मूसा अ. का डण्डा एक कठोर पत्थर पर गाड़ देंगे। वह उसी समय एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेगा कि समस्त सेना उसके नीचे आ जाएगी। (14) कुल इमामों को साहेब-उल-अम्र अ० संसार में फेर लाएंगे और उनके सहायकों को भी ताकि वे प्रसन्न हों और उनके विपक्षियों को भी ताकि परलोक से पूर्व ही संसारिक कष्ट एंव दण्ड भोग लें। (15) शैतान, उसके अनुयायी एंव वंशजीय शैतान सब एकत्र होंगे। उनसे कूफ़ा के समीप हज़रत अली अ० से भयंकर और भीषण युद्ध होगा। वे समस्त शैतान हज़रत अली अ० तथा फ़िरिश्तों की सहायता से मारे जाएंगे। (16) मोमिनों तथा बैरियों के प्राण उनके शरीरों में पुनः प्रवेश करेंगे ताकि मोमिन (सच्चा मुसलमान) बैरियों से अपना बदला चुकायें। (17) कुल संसार की आयु 1 लाख वर्ष है। 30 हज़ार वर्तमान कालीन व्यक्तियों के धन तथा राज्य की है और 80 हज़ार वर्ष मोहम्मद साहब और उनके परिवार के धन का समय है। (18) हज़रत मुहम्मद साहब का वस्त्र शरीर में पीला अमामा (पगड़ी) सिर पर, पैरों में मुहम्मद साहब का जूता और हाथ में आप ही का डण्डा, तलवार और ध्वजा होगी।